

खान की बेटी

मंगोलिया की एक लोककथा






खान की बेटी

मंगोलिया की एक लोककथा










बहुत समय पहले की बात है। मंगोलिया के एक गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। उसका एक बेटा था - मोंगके। उस आदमी ने अपने बेटे से कहा था कि एक दिन वह बहुत धनवान बनेगा और खान की बेटी के साथ उसका विवाह होगा।

पिता के देहांत के बाद मोंगके अपना समय भेड़ें चराने में बिताता और उस दिन की प्रतीक्षा में रहता जिस दिन पिता की भविष्यवाणी सच होनी थी। दिन, महीने, साल बीते, मोंगके बस अकेले ही भेड़ें चराता रहा; न वह धनवान बना और न ही उसका विवाह खान की बेटी के साथ हुआ।

“अगर मैं यहीं गाँव में अपना समय बिताता रहा तो पिता की भविष्यवाणी कभी सच न होगी,” हारकर एक दिन मोंगके ने अपने आप से कहा, “न तो शहज़ादी मझे जानती है और न ही उसे पिता की भविष्यवाणी के बारे में पता है। क्यों न मैं ही उसके पास जाऊँ और विवाह का प्रस्ताव रखूँ?”

उसने सारे जानवर मालिक के बाड़े में पहुंचा दिए। फिर वो अपना लाल रंग का कोट पहनकर खान की बेटी के तलाश में घर से निकल पड़ा। चलते-चलते उसने सागर के समान विशाल घास के मैदान पार किये। वो नीले आकाश के नीचे चलता रहा। चलते-चलते वह एक दिन खान की नगरी पहुँच ही गया।







वहां का दृश्य देख कर वह हैरान रह गया। चारों ओर तंबू ही तंबू लगे थे। उन तंबूओं के ऊपर धर्य की लकीरें ऐसे उठ रही थीं जैसे आकाश में हर तरफ सूत के धागे फैले हों। तंबूओं के बाहर घोड़े, ऊँट और बाँझा ढोने वाले याक बंधे थे। खान के सैनिक और अन्य नागरिक तत्परता से यहाँ-वहाँ भाग रहा थे। खान को सूचना मिली थी कि एक बड़ा शत्रु हमला करने वाला था। सेना और नागरिक उसी हमले का मुकाबला करने की तैयारी कर रहे थे।

मोंगे आश्चर्यचकित-सा सब देखता रहा। उसने इतने ज़्यादा लोग जीवन में पहली बार देखे थे।

तभी उसे पिता की भविष्यवाणी ध्यान आई. वह सीधा बीच में लगे सबसे बड़े खेमे की ओर चला. वह खान का खेमा था.

वहां पहुँच उसने ज़रा ऊंची आवाज़ में कहा, “मेरा नाम मोंगके है. मेरे भाग्य में लिखा है कि मेरा विवाह खान की बेटी के साथ होगा.”

खान की बेगम और बेटी खेमे के अंदर, खान और उसके सेना-नायकों की सेवा कर रहीं थीं. जब खान की बेगम ने मोंगके की बात सुनी तो वह गुस्से से तन कर खड़ी हो गयी. “उस नीच ने ऐसी बात कहने की हिम्मत कैसे की?” बेगम गुस्से में बोली.

बेगम का बस चलता तो उसी समय मोंगके को मरवा डालती. लेकिन उसकी बेटी, शहज़ादी बोरते, हंस पड़ी. उसने माँ से कहा, “अगर खान का विवाह एक साधारण नागरिक से हो सकता है तो एक साधारण नागरिक खान की बेटी के साथ विवाह क्यों नहीं कर सकता?”

बेटी की बात सुन माँ को ध्यान आया कि जब खान ने उसके साथ विवाह किया था तब वह स्वयं भी एक साधारण नागरिक ही थी.

तब खान ने अपने सेना-नायकों से कहा, “युद्ध की तैयारी करने से पहले क्यों न इस गंवार के साथ थोड़ा मज़ाक किया जाये? हमारा कुछ मनोरंजन ही हो जाएगा.”

खान की बेगम अभी भी बहुत गुस्से में थी, फिर भी उसने मुस्कराते हुए कहा, “आप जो चाहें करें, लेकिन मेरी तीन शर्तें इस युवक को पूरी करनी होंगी.”

खान ने बेगम की बात मान ली. माँ और बेटी एक परदे के पीछे जाकर खड़ी हो गईं.





मोंगे खेमे के अंदर आया. खान के सम्मान में वह झुककर खड़ा हो गया. खान ने सुंदर वस्त्र और सोने के आभूषण पहन रखे थे. उसकी तलवार हीरों से जड़ी थी. यह देखकर मोंगे को अपनी वेश-भूषा बहुत ही घटिया लगी. खान के पीछे एक खूंखार बाज़ बैठा था और उसके आस-पास शक्तिशाली सेना-नायक बैठे थे.

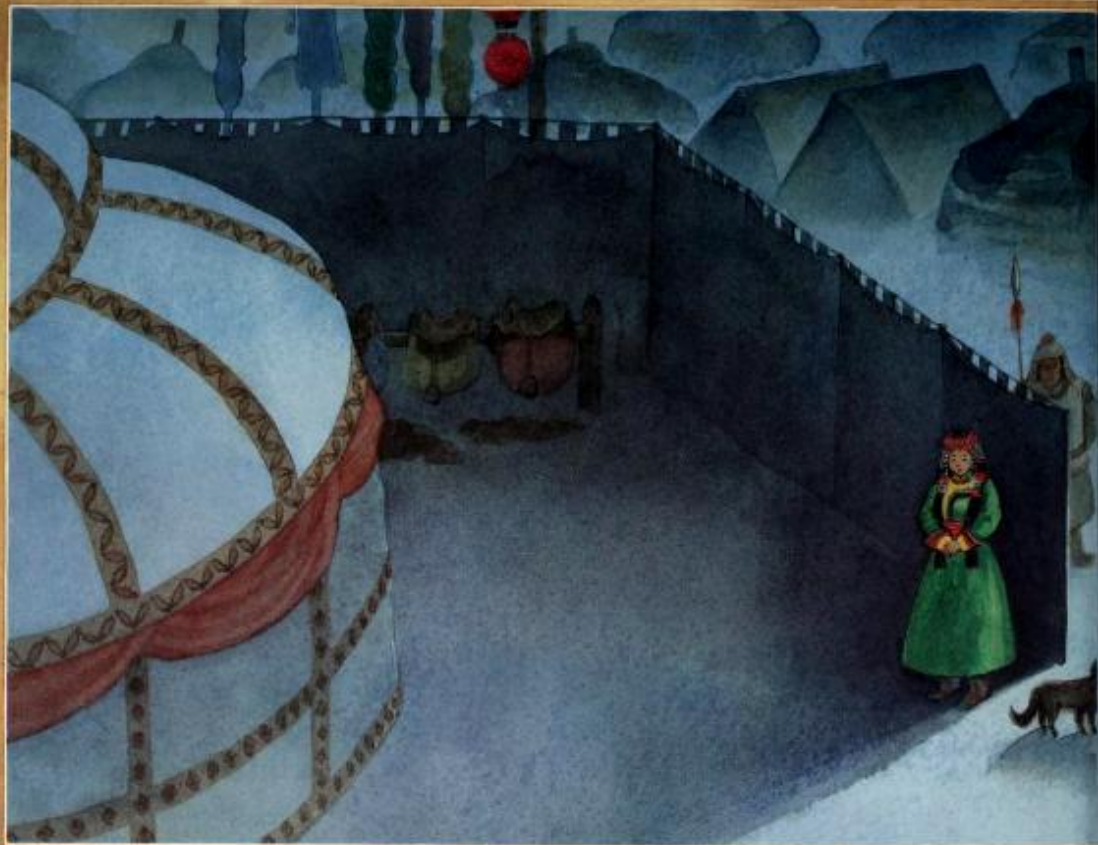
मोंगे की खस्ता हालत के बावजूद शहज़ादी बोरते को उस युवक में कुछ प्रतिभा दिखाई दी. लेकिन इसके पहले कि वह कुछ कहती, उसकी माँ ने खान के कान में धीमे से कहा, “हमारी शहज़ादी का पति खब ताकतवर होना चाहिए. दूर पहाड़ों में सात दानव रहते हैं. इससे कहा कि उन दानवों को मारकर उनका सारा धन यहाँ ले आये.”

खान और उसकी बेटी को लगा कि यह बहुत कठिन काम था. फिर भी खान ने उसे यह शर्त पूरी करने को कहा. मोंगे भयभीत था. लेकिन इस बीच उसने शहज़ादी को एक झलक देख लिया था. अब वह कोई भी जोखिम उठाने को तैयार था.

उसने कहा, “बस मुझे इतना बताइये कि वह सात दानव कहाँ हैं.”









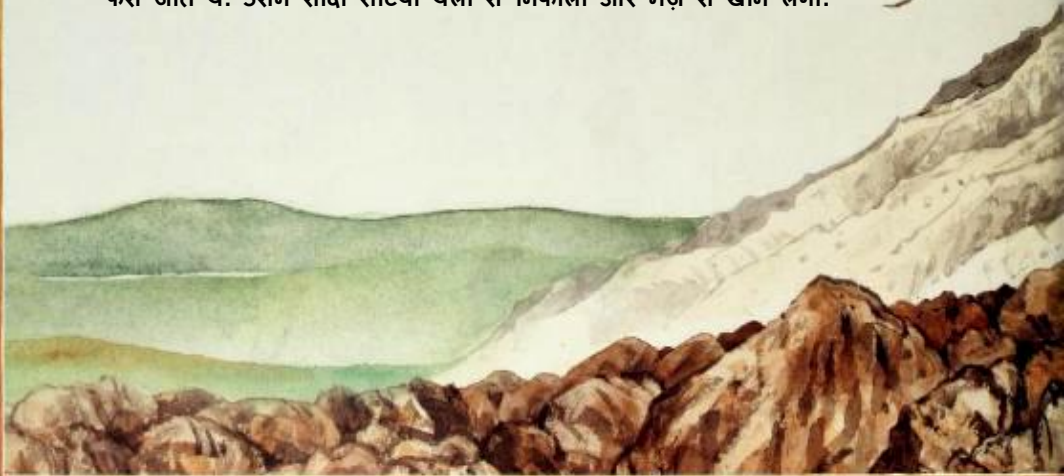
खान की बेटी को मोंगके पर तरस आया. उसकी सहायता करने के लिये उसने आटे में तिल मिला कर सात रोटियाँ बनाई और सात सादी रोटियाँ बनाई. लेकिन जब बोरते का ध्यान कहीं ओर था तब उसकी माँ ने तिल वाली रोटियों में ज़हर मिला दिया. फिर उसने यह रोटियाँ मोंगके को दे दीं और कहा, “जाते समय तुम तिल वाली रोटियाँ खाना और लौटते समय सादी.”

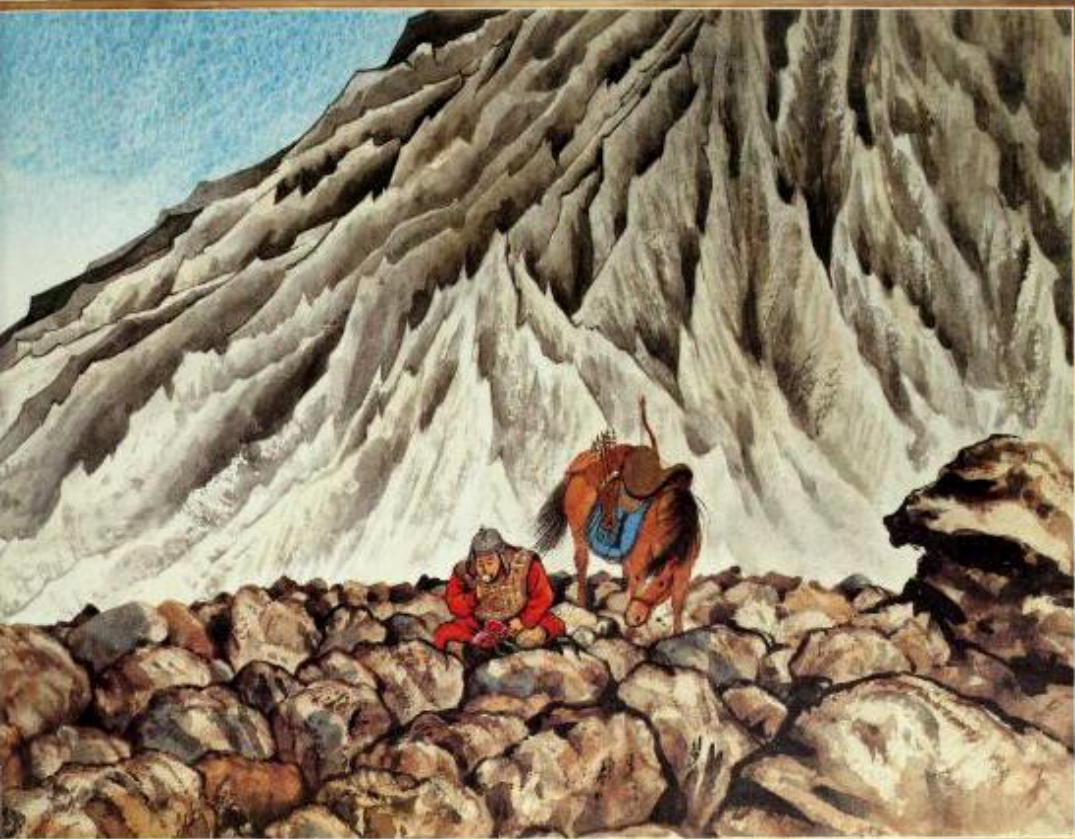
बोरते की माँ को विश्वास था कि दानवों के मारने से पहले ही ज़हरीली रोटियाँ मोंगके को मार डालेंगी.



खान ने जो घोड़ा उसे दिया था उस पर सवार होकर मोंगके अपने अभियान पर निकल पड़ा. उसने कई मैदान पार किये, कई पहाड़ियों पर चढ़ा, घने जंगलों से होता हुआ नुकीली चट्टानों तक पहुँच गया. पथरीले, चट्टानी रास्ते पर गुज़रता हुआ आगे बढ़ता गया. परन्तु अब उसे लग रहा था कि इस अभियान पर आकर उसने शायद गलती कर दी थी.

मोंगके को खाना बहुत अच्छा लगता था. वह साथ लाई रोटियाँ खाने बैठ गया. उसे तिल की रोटियाँ पसंद न थीं क्योंकि तिल उसके दाँतों में फँस जाते थे. उसने सादी रोटियाँ थैली से निकालीं और मज़े से खाने लगा.





अब तक दानवों को पता लग गया था कि कोई उनके इलाके में घुस आया था. सातों दानव अपनी गुफा से बाहर आये और चिल्लाये, “किसने यहाँ आने का साहस किया है?”

दानवों की धमकी भरी आवाज़ सुन, मोंगके एकदम डर गया और रोटियों की थैली वहीं छोड़कर भाग खड़ा हुआ. जब दानव वहाँ पहुंचे तो उन्हें एक थैली दिखाई दी. वह रुक गए. उन्होंने थैली खोल कर देखी. थैली में तिल की सात रोटियां थीं, “अरे, इस में तो सब के लिये एक-एक रोटी है. यह रोटियाँ खाकर तो हमारी भूख बढ़ जायेगी. फिर उस आदमी को खाने में खूब मज़ा आएगा.”

परन्तु जैसे ही उन्होंने रोटियाँ निगलीं वह सब के सब मर गये.

उधर मोंगके भागते-भागते अचानक रुक गया. उसे अपने-आप पर शर्म आने लगी. “खान की बेटी क्या सोचेगी? वह तो मुझे कायर ही समझेगी,” उसने मन-ही-मन कहा और वापस चल दिया.





लौट कर उसने सब दानवों को मरा हुआ पाया। दानवों की गुफा में छिपा हुआ धन उसने इकट्ठा किया और खान के पास आया।

इस बीच खान के गुप्तचर सूचना लाये थे कि शत्रु ने हमला कर दिया था। हमले का सामना करने के लिये खान की सेना तैयार थी। खान स्वयं भी लड़ाई के मैदान में जाने के लिये तैयार हो रहा था।

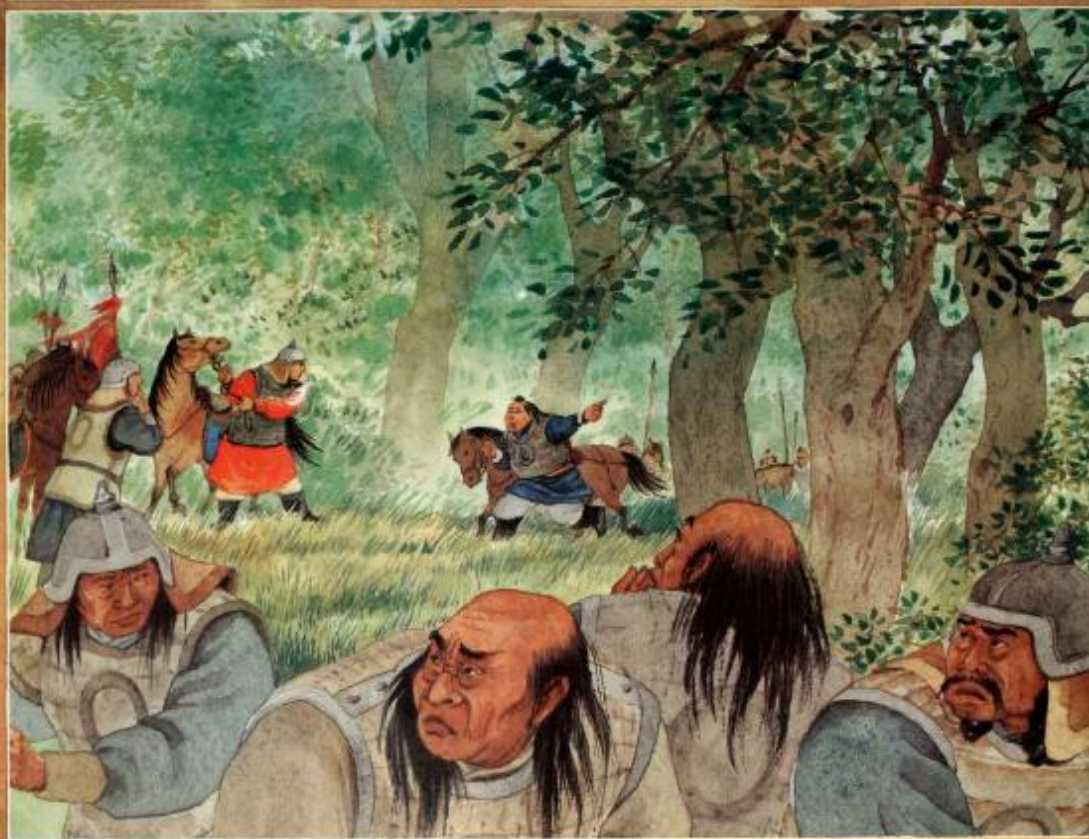
तभी मोंगके ने दानवों का सारा धन उसके सामने रख दिया। वहां चीन में बने स्वर्ण आभूषण और मोती थे, भारत के हीरे-जवाहरात थे, खोतान के कीमती पत्थर थे। दावनों ने यह सारी बहुमूल्य वस्तुएं अलग-अलग काफिलों से लूटी थीं।

खान या शहजादी के कुछ कहने के पहले ही खान की बेगम बोली, “हमारी बेटी का पति ताकतवर ही नहीं, बहादुर भी होना चाहिए। इसे कहो कि शत्रु की सेना को मार भगाये।”

मोंगके पहले से ज़्यादा डरा हुआ था, फिर भी उसने साहस दिखाते हुए कहा, “मुझे बस यह बताओ कि शत्रु की सेना कहाँ है?”









खान ने घुड़सवारों का एक छोटा-सा दल उसे दे दिया. मोंगके की अगुआई में इस दल को सारी सेना के आगे-आगे चलना था और शत्रु का सामना करना था.

कई मैदानों के पार करता हुआ मोंगके का दल आगे बढ़ता गया. फिर वह एक जंगल में पहुंचे. कुछ देर रुक कर सब थोड़ा विश्राम करने लगे.

अचानक धरती हिलने लगी. एक गुप्तचर अपने घोड़े पर सरपट भागता हुआ आया.

“हमारा शत्रु आ रहा है.....उनकी संख्या हज़ारों में है,” गुप्तचर ने चिल्ला कर कहा.

मोंगके घबराकर तुरंत अपने घोड़े पर सवार हो गया. उसने चिल्ला कर अपने सिपाहियों से कहा, “चाहे वह बीस हों या हज़ार, हम भेड़ों के समान उन्हें यहाँ से खदेड़ देंगे.”

उसके साथ आये सैनिक आपस में बड़बड़ाने लगे, “इसे तो बस भेड़ों की ही समझ है, लड़ाई के बारे में कुछ नहीं जानता. अगर हम इस गड़रिये के पीछे गए तो अवश्य ही मारे जायेंगे.”

मोंगके के साथ आये घुड़सवार भाग खड़े हुए. लेकिन वह अकेला आगे बढ़ता गया. हड़बड़ी में वह सीधा एक छोटे पेड़ में जा घुसा और उस पेड़ की शाखाओं में बुरी तरह उलझ गया. उसका घोड़ा इतना तेज़ भाग रहा था कि वह नन्हा पेड़ जड़ों सहित उखड़ कर ज़मीन से बाहर आ गया.

शत्रु सैनिकों ने देखा कि एक हरे बालों वाला भयंकर योद्धा बड़ी तेज़ रफ़्तार से उनकी ओर आ रहा था.

“इसके तो एक.....पांच.....अनगिनत बाजू हैं.....मैं गिन भी नहीं पा रहा.....” एक शत्रु सैनिक चिल्ला कर बोला.

शत्रु सेना का खान भी डर के मारे कांपने लगा, “यह उन सात दानवों में से एक होगा.”

शत्रु सैनिक इतने भयभीत हो गये की आनन-फानन में वहां से भाग खड़े हुए. अपना सामान और जानवर भी वह पीछे ही छोड़ गए.









मोंगके अपने खान के पास लौटा तो उसके पीछे जानवरों और गाड़ियों की एक बहुत लंबी कतार थी जिन पर लूट का सारा माल लदा था। उसे देख कर खान बहुत हैरान हुआ क्योंकि उसके साथ गए घुड़सवारों ने बताया था कि मोंगके मारा गया था।

अब खान और अन्य लोग मोंगके की खूब प्रशंसा करने लगे। खान की बेगम को भी स्वीकार करना पड़ा कि मोंगके ने अपने को शहजादी के योग्य साबित कर दिया था।

लेकिन शहजादी बोरते ने उन्हें टोक कर कहा, “इसने अभी तक आपकी शर्त पूरी की हैं, मेरी नहीं।”

मोंगके अपनी सफलता से इतना उत्साहित था कि उसने झट से कहा, “मैंने सात दानवों को मार डाला, मैंने शत्रु सेना का नाश कर दिया। मैं किसी से भी नहीं डरता।”

“लेकिन फिर भी संसार में ऐसा कोई न कोई होगा है जो तुम से अधिक ताकतवर और बहादुर और होशियार होगा। तुम्हारी तीसरी चुनौती है चालाक और ताकतवर बगातुर को हराना,” खान की बेटी ने कहा।

बोरते की चुनौती सुन मोंगके ने अकड़ कर कहा, “तुम मुझे बस इतना बता दो कि वह कहाँ मिलेगा।”

अगले दिन वह अपने तीसरे अभियान पर निकल पड़ा। जब वह एक मैदान को पार कर रहा था, उसने आकाश में गर्द का एक गुब्बारा देखा। अपनी आँखें मिचमिचा कर उसने देखा, उसे एक घुड़सवार आता दिखाई दिया। घुड़सवार ने कार्ल रंग के कपड़े पहन रखे थे और अपने चेहरे पर एक रुमाल लपेट रखा था।

“तुम कौन हो?” मोंगके ने पूछा।

“मैं बगातुर हूँ,” घुड़सवार ने बड़ी रूखी आवाज़ में कहा, “अगर जीवित रहना चाहते हो तो आत्म-समर्पण कर दो।”

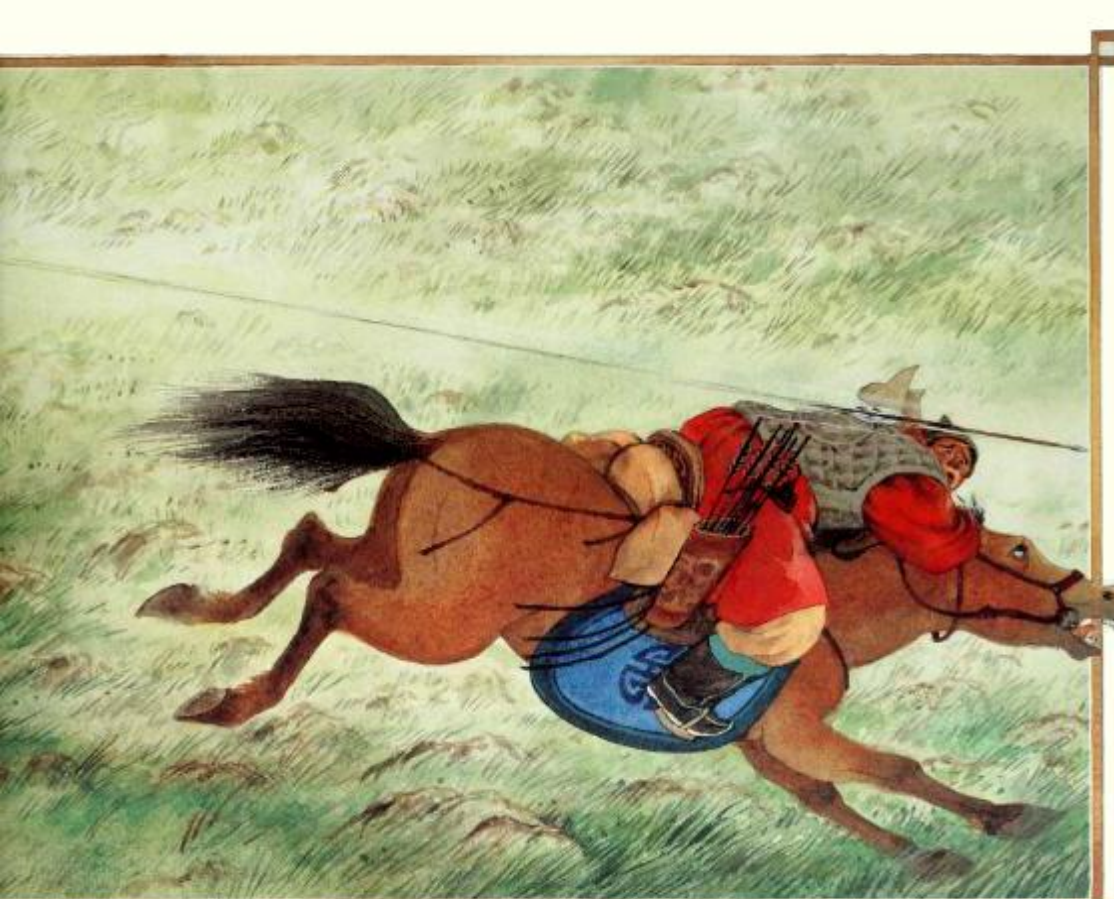
मोंगके ने हड़बड़ी में बगातुर को एक तीर मारा। पर उसका निशाना चूक गया। अब बगातुर ने तीर मारा। यह तीर मोंगके के कान को छूता हुआ निकल गया।

“मैंने जानबूझ कर सही निशाना नहीं लगाया,” बगातुर ने कहा, “लेकिन अगली बार ऐसा न होगा, तीर निशाने पर ही लगेगा।”

मोंगके बिल्कुल डर गया। वह अपने घोड़े से लुढ़क कर ज़मीन पर आ गया। उसने नीचे झुकते हुए कहा, “खान की बेटी ने मुझे चंतावनी दी थी, लेकिन मैंने ही उसकी बात अनसुनी कर दी। मैं तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता। तुम अवश्य ही मुझ से अधिक ताकतवर और बहादुर हो। मेरा घोड़ा और मेरे सारे शस्त्र ले लो पर मुझे जीवित छोड़ दो।”

बगातुर जोर से हंसा। उसने मोंगके का सब कुछ छीन लिया और वहां से चल दिया।





चिथड़े पहने हुए मोंगके मायूस-सा खड़ा था। उसने अपने आप से कहा, “खान की बेटी की बात न मारने कर मैंने बड़ी भूल की।”

अब वह अपने गाँव लौट जाना चाहता था। लेकिन शहज़ादी बोरते को एक बार देखने की लालसा उसके मन में उठी।

“अंतिम बार शहज़ादी को देख लूँ तो यह अपमान और कष्ट व्यर्थ न जायेंगे,” उसने कहा और शहर की ओर चल दिया।

कुछ मील चलने के बाद उसे शहज़ादी दिखाई दी। वह घास के एक मैदान में बैठी थी। जैसे ही वह निकट पहुंचा तो बोरते ने पूछा, “क्या बगातुर से मुलाकात हुई?”

बोरते को प्रभावित करने के लिये मोंगके ढींग मारने लगा, “मैंने उसे इतनी बुरी तरह हराया कि मुझे ही उस पर तरस आने लगा। इसलिये मैंने अपना घोड़ा और सारा सामान उसे दे दिया।”

उसकी ढींग सुनकर बोरते ने अपने चेहरे पर एक रुमाल लपेट लिया और बगातुर की आवाज़ में उसे धमकाया, “सच बोलो नहीं तो दुबारा मेरा क्रोध सहने के लिये तैयार हो जाओ।”

अपमान और शर्म से मोंगके का चेहरा लाल हो गया। वह समझ गया कि बोरते ने ही बगातुर के भेष बना रखा था। “तुम जीतीं, मैं हारा,” उसने कहा।

बोरते ने चेहरे से रुमाल हटा दिया और मुस्कराई। “मुझे ऐसा पति चाहिए जो बहादुर तो हो पर समझदार अधिक हो, जिसे अपनी जान गवाने की कोई जल्दी न हो।”

“मैं सदा तुम्हारा कहा मानूंगा,” उसने वचन दिया, “तुम बस मुझे रास्ता दिखाती रहना।”

“अगर ऐसा है तो तुम ने अंतिम इम्तहान भी पास कर लिया,” बोरते ने कहा, “और एक बात ध्यान से सुनो। बगातुर के साथ हुई तुम्हारी लड़ाई के बारे में हम किसी को कुछ नहीं बताएँगे।”

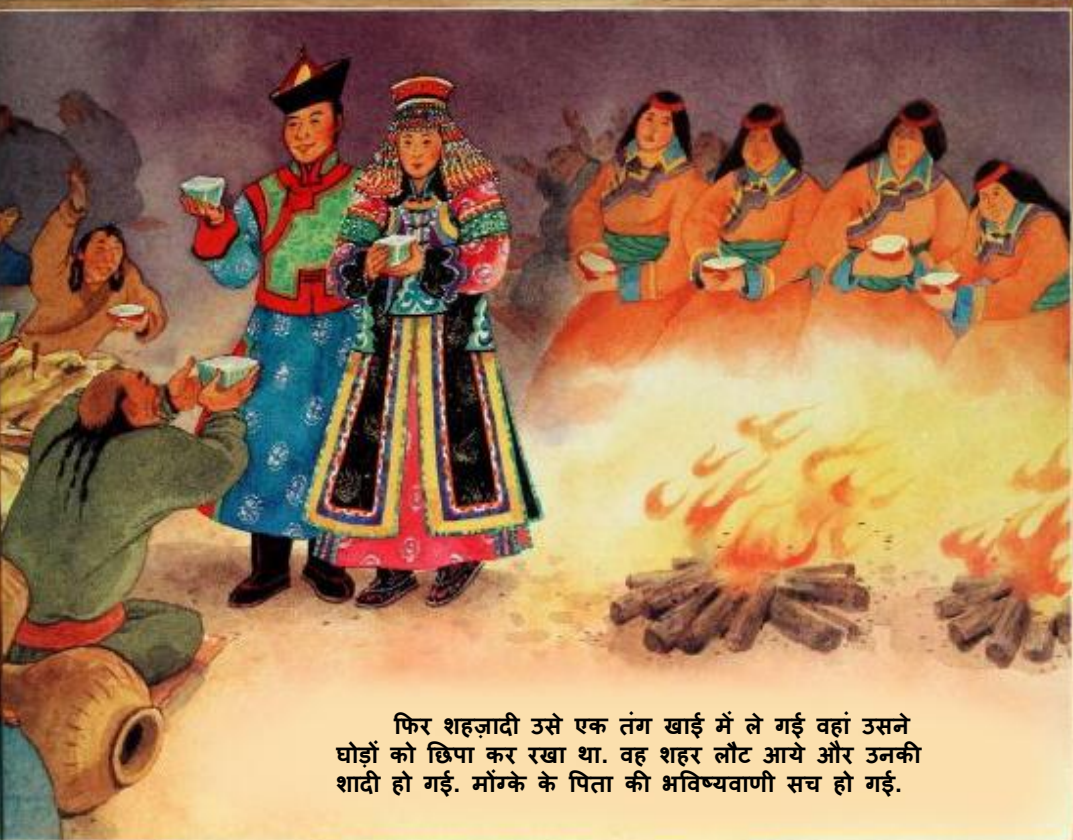
“तुम्हारी माँ को भी नहीं?” मोंगके ने पूछा।

“माँ को तो बिल्कुल भी नहीं,” बोरते ने कहा।









फिर शहज़ादी उसे एक तंग खाई में ले गई वहां उसने
घोड़ों को छिपा कर रखा था. वह शहर लौट आये और उनकी
शादी हो गई. मोंगके के पिता की भविष्यवाणी सच हो गई.



खान के पास जो कुछ भी था उसका आधा उसने मोंगके को दे दिया. अब खान उसे अपने बराबर का ही मानता था. मोंगके भी बोरते को अपने बराबर मानता था. उनके साहस और समझदारी की ख्याति ऐसी थी कि उनके शत्रुओं ने उन पर आक्रमण करने की बात सोची भी नहीं.

वह दोनों बड़े मज़े से अपना जीवन बिताते रहे.

